

सूरह गाशियह^[1] - 88

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरह गाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल गाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।^[1]
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से कुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आखिर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क्यामत) का समाचार आया?
2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ

1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरवाद (तौहीद) तथा परलोक (आखिरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

- | | |
|---|---|
| 3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे। | عَابِلَةٌ أَتَّيَبَتْ ۝ |
| 4. पर वे धहकती आग में जायेंगे। | تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ۝ |
| 5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा। | تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ۝ |
| 6. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी। | لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيرٍ ۝ |
| 7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी। ^[1] | لَا يُسَمِّنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝ |
| 8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे। | وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝ |
| 9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे। | لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ |
| 10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे। | فِي جَنَّاتٍ عَالِيَةٍ ۝ |
| 11. उस में कोई बकवास नहीं सुनेंगे। | لَا تَسْمَعُ فِيهَا الْأَغْنِيَةَ ۝ |
| 12. उस में बहता जल स्रोत होगा। | فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ |
| 13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे। | فِيهَا سُرُورٌ مُرْتَوْعَةٌ ۝ |
| 14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे। | وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝ |
| 15. पकितियों में गलीचे लगे होंगे। | وَنَسَارٍ مُصَفًوَةٌ ۝ |

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगे: एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।

तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ है: थक कर चूर हो जाना, अर्थात् काफ़िरों को क्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत खराब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे।

इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि: उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे, इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मखमली कालीनें बिछी होंगी।^[1]

17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?

18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?

19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?

20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई?^[2]

21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।

22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।

23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,

24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।

25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।

26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।^[3]

وَذَرَانِ مَبْثُوثَةٌ ۝

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

وَالِ السَّمَاءَ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝

وَالِ الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝

وَالِ الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ۝

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ कुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।

2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है कि: जो कुर्आन की शिक्षा तथा परलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीजों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती हैं, ऊँटों तथा पर्वतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल कुर्आन)

3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि कुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी कुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।